डॉ·शिवाजी विष्णु निकम
एम्·ए·पीएच·डी·
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक
हिन्दी विभाग
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा (महाराष्ट्र)

प्र मा ण प त्र

मैं डॉ·शिवाजी विष्णु निकम, स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक, हिन्दी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा, यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री·गजानन सदाशिव भोसले ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल·(हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध **"रामदरश मिश्र के काव्य का सृजनात्मक मूल्यांकन"** मेरे निर्देशन में बड़े परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया है। श्री·गजानन सदाशिव भोसले के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ। सम्पूर्ण लघु-शोध-प्रबंध को आरंभ से अंत तक पढ़कर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ।

सातारा

दिनांक : 30·12·94

डॉ·शिवाजी विष्णु निकम
शोध-निर्देशक के हस्ताक्षर

30/12/1994

(हिन्दी विभाग प्रमुख)

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थेचे
लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज, सातारा

(प्र· ओ· म· शिंदे)
प्राचार्य,
लाल बहादुर शास्त्री
महाविद्यालय, सातारा.

प्र स्था प न

रामदरश मिश्र के काव्य का सृजनात्मक मूल्यांकन

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्·फिल्·के लघु-शोध-प्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा

दिनांक :

श्री·गजानन सदाशिव भोसले

शोध-छात्र के हस्ताक्षर

भू मि का

बहुमुखी प्रतिभा-संपन्न साहित्यकार डा·रामदरश मिश्रजी ने यद्यपि साहित्य के सभी - कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध, यात्रावृत्त, आलोचना आदि अंगों पर कुशलता से अपनी लेखनी चलाई है, पर उनकी साहित्य-यात्रा का आरंभ काव्य से ही हुआ है और काव्य ही शीर्ष पर है।

मिश्रजी का बचपन गांव की अनंत कठिनाइयों के बीच गुजरा। कठिनाइयों तथा विसंगत परिस्थितियों का सामना करते हुए उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की और प्राध्यापक बन गये। अतः उनका नगर से नाता जुड़ गया। नगर या शहर की चकाचौंध में शामिल होने वाले अधिकतर व्यक्ति अपने गांव तथा वहाँ की स्मृतियों को भूल जाते हैं। लेकिन मिश्रजी इनमें से नहीं हैं। उन्होंने जिस ग्रामांचल में जीवन बिताया, अपनी कविताओं में उसका चित्रण करके गांव के प्रति अपना प्रेम प्रकट किया। गांव के सीधे-सादे लोग उन्हें अंततक अपने लगते रहें - उनकी समस्त कमियों के साथ। यही कारण है कि मिश्रजी के प्रति मेरा आकर्षण बढ़ता गया और उनके समस्त काव्य के सृजन के पीछे होने वाली प्रेरणा को जानने की इच्छा मेरे मन में उत्पन्न हुई। यों तो उनके साहित्य को लेकर कुछ आलोचनात्मक पुस्तकें तैयार हुई हैं तथा कुछ शोध-छात्र उनके साहित्य पर अपने शोध-ग्रंथ लिख रहे हैं। लेकिन "उनके काव्य के सृजन के पीछे कौनसी प्रेरणा है" इसे आज तक किसी ने स्पष्ट नहीं किया है। और किसी भी साहित्यकार के साहित्य का मूल्य तब तक किसी नहीं किया जा सकता कि जब तक उसके निर्माण के मूल में कार्य करने वाले एवं निर्माण के लिए प्रेरणा देने वाले तत्वों को स्पष्ट नहीं किया जाता। अतः मुझे इस बात का हर्ष हो रहा है कि मैंने मिश्रजी के काव्य के सृजनात्मक मूल्यांकन पर लघु-शोध-प्रबंध के द्वारा शोध कार्य किया है। एक तरह से यह खेद का विषय भी रहा है कि "मिश्र" जैसे श्रेष्ठ प्रगतिशील एवं मानवतावादी विचारधारा के कवि के काव्य का सृजनात्मक मूल्यांकन आज तक किसी ने नहीं किया। कई ग्रंथों में उनके काव्य पर जरूर कुछ लिखा गया है, लेकिन डा·फूल बदन यादव द्वारा लिखित

"रामदरश मिश्र : व्यक्तित्व और कृतित्व" ग्रंथ को छोडकर उनके काव्य पर स्वतंत्र रूप से कोई काम नहीं हुआ है। डा·यादव जी के ग्रंथ में भी उनके सृजनात्मक मूल्यांकन पर संक्षेप में ही लिखा है। अतः मिश्रजी के काव्य का सृजनात्मक मूल्यांकन करना मैंने अपना परम कर्तव्य समझा।

आज जब हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल में नये कवियों के काव्य की बाढ़-सी आ रही है और अपने काव्य को प्रखर बनाने के लिए कोरी भावुकता तथा नग्न यथार्थता के अपनाया जा रहा है, तब मौलिक रचनाओं के निर्माण की मूल प्रेरणा को उजागर करणा महत्त्वपूर्ण लग रहा है। मिश्र जैसे अनुभवसिद्ध कवि के काव्य का सृजनात्मक मूल्यांकन करना अनिवार्य बन गया है। इस कार्य में मेरा यह लघु-शोध-प्रबंध एक विनम्र प्रयास मात्र रहा है।

मैंने अपने लघु-शोध-प्रबंध को छः अध्यायों में विभाजित किया है। मेरे शोध-प्रबंध का प्रथम अध्याय "रामदरश मिश्र : व्यक्तित्व और कृतित्व" है। इसमें मिश्रजी का जन्म तथा जन्मस्थान, माता-पिता, पारिवारिक जीवन, शिक्षा, स्वभाव-विशेष, साहित्यिक व्यक्तित्व, गांव के प्रति स्वाभाविक आकर्षण, अध्यापकीय जीवन, जीवन की अन्य उपलब्धियाँ और उनके सम्पूर्ण कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है।

द्वितीय अध्याय में मिश्र के काव्य में अभिव्यक्त मानवतावादी विचारधारा को स्पष्ट किया है। तृतीय अध्याय में समाज की बुराइयों तथा राजनीतिक अव्यवस्था आदि पर उन्होंने जो व्यंग्य किया है, उसे विश्लेषित किया है। चतुर्थ अध्याय में मिश्र की प्रगतिशील विचारधारा को स्पष्ट किया है और पंचम अध्याय में मिश्रजी की काव्य-भाषा की विशेषतओं को विवेचित किया है।

कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम मैं श्रद्धेय डा·निकमजी का आभारी हूँ। क्योंकि उनके आद्योपांत निर्देशन में प्रस्तुत शोध-प्रबंध को प्रारंभ, विकास और परि-समाप्ति मिल सकी

है। अपने कार्य में हमेशा व्यस्त रहने के बावजूद भी आपने निरंतर सस्नेह मार्गदर्शन किया है।

डा·रामदरश मिश्रजी ने विवेच्य पुस्तकों की उपलब्धि की जानकारी देकर तथा अपना छायाचित्र भेजने का कष्ट उठाकर जो अनुग्रह किया है, उसे मैं कैसे भूल सकता हूँ ? अतः मैं आपका हृदय से आभारी हूँ।

श्रद्धेय प्राचार्य आर·डी·गायकवाडजी, गुरूवर्य डा·व्ही·के·मोरेजी और मेरे जीवन-प्रवाह को सही मोड़ देने वाले आदरणीय चाचाजी (बाबा सावंत, असि· रजिस्ट्रार, शिवाजी विश्वविद्यालय) तथा चाचीजी का आशीर्वाद तथा प्रोत्साहन मेरे साथ रहा, मैं ऋण-निर्देश प्रकट करके इस ऋण से मुक्त नहीं हो सकता।

लाल बहादुर शास्त्री कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ·गजानन सुर्वेजी तथा प्राचार्य पुरुषोत्तम सेठ के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

इनके अलवा प्रिय मित्र प्रा·सादिक देसाई, प्रा·शिवलिंग मेनकुदळे, प्रा·शिवाजी भोसले, डा·मोहन जाधव, प्रा·झाकिर हुसेन मुलाणी, प्रा·सुखदेव शिंदे, प्रा·बालासाहब बलवंत, श्री·बाबू भोसले आदि ने भी इस शोध-कार्य में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहायता की है। अतः इन सबका मैं ऋणी हूँ।

उपर्युक्त शुभचिंतकों के अतिरिक्त मुझे अधिक से अधिक पढ़ाने की जिद रखने वाले मेरे पूज्य पिताजी और माताजी तथा आदणीय भाई साहब और भाभीजी के आशीर्वचन इस शोधकार्य के लिए विशेष उपयोगी साबित हुए हैं। मेरी प्रिय धर्मपत्नी सौ·अर्चना का प्रोत्साहन और सहायता न मिलती तो शायद मेरा यह शोध-कार्य अधूरा ही रह जाता। अतः मेरे शोध-कार्य में ये बराबर के हिस्सेदार हैं।

मैं उन कवियों, लेखकों तथा आलोचकों विद्वानों का भी सविनय आभारी हूँ कि जिनकी रचनाओं एवं शोध-ग्रंथों से मैंने किसी न किसी रूप से सामग्री ग्रहण की है।

इस लघु-शोध-प्रबंध का सुचारू रूप से और अल्पावधि में टंकन करने वाल **रिलॅक्स सायक्लोस्टाइल सातारा** के श्री·मुकुन्द ढवले, श्री·सुशीलकुमार कांबले और उनके सहयोगी श्री·राजू कुलकर्णी इनके प्रति भी मैं आभारी हूँ।